कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 (SST) Minor - 04 [Revised-ANSWER KEY] HELD ON : 31/08/2025

Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
Ans.	1	1	1	3	2	3	4	2	3	1	1	2	2	1	2	2	4	3	1	1
Q.	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
Ans.	3	4	2	4	2	1	1	3	4	2	3	3	1	2	2	4	4	2	3	3
Q.	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
Ans.	4	4	3	3	1	1	2	3	2	2	3	4	2	3	4	2	2	2	2	2
Q.	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
Ans.	1	4	4	4	2	3	3	4	2	1	1	3	1	3	2	2	2	4	4	4
Q.	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
Ans.	1	3	4	4	2	4	2	1	4	4	4	4	2	3	3	4	3	2	3	3
Q.	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120
Ans.	4	1	2	3	2	3	1	4	2	1	1	1	1	4	2	3	1	1	3	1
Q.	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140
Ans.	1	2	4	3	3	2	2	4	3	1	1	2	2	2	3	1	2	3	4	2
Q.	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150										
Ans.	3	3	3	3	2	1	2	1	4	2										

1. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **भौगोलिक दृष्टि से राजस्थान में तीन प्रकार के प्रमुख वन पाये जाते हैं -**

वनों के प्रकार

- उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वन
- उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पतझड़ वाले वन
- उपोष्ण पर्वतीय वन या अर्द्ध उष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन

उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पतझड़ वाले वन:

(i)	शुष्क सागवान के वन	(ii)	सालर वन
(iii)	बांस के वन	(iv)	धोकड़ा के वन
(v)	पलाश के वन	(vi)	खैर के वन
(vii)	बबूल के वन	(viii)	मिश्रित पर्णपाती वन

2. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों को तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है-**

राजस्थान वन विभाग द्वारा वन अधिनियम 1953 के प्रावधानों के अनुसार वैधानिक/ प्रशासनिक दृष्टि से वनों को तीन श्रेणियों में बांटा गया है-

1. **आरक्षित वन (Reserved Forest)**- इसमें किसी भी प्रकार की आर्थिक गतिविधि नहीं की जा सकती है।
2. **संरक्षित या सुरक्षित वन (Protected Forest)**- इसमें लाइसेंस प्राप्त कर पशुचारण व सुखी लकड़िया एकत्रित करने संबंधी कार्य कर सकते हैं।
3. **अवर्गीकृत वन (Unclassified Forest)**- आरक्षित व संरक्षित के अलावा शेष बचे हुए वनक्षेत्र (इसमें किसी प्रकार का प्रतिबंध नहीं है)।

3. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **वनावरण में सर्वाधिक कमी (वर्ग किमी.) करने वाले जिले-**

जिला		**वर्ग किमी.**
जालौर	-	32.46
करौली	-	26.16
सिरोही	-	13.49
भरतपुर	-	9.21

4. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अर्जुन वृक्ष**- अर्जुन वृक्ष एक औषधीय वृक्ष है जो राजस्थान के झालावाड़ जिले में भवानी मण्डी क्षेत्र में बहुतायात में पाया जाता है।
- **महुआ- वैज्ञानिक नाम**- मधुका लोंगिफोलिया (सर्वाधिक- डूँगरपुर)।

  इसे 'आदिवासियों का कल्पवृक्ष' कहा जाता है।

  महुआ फूल का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है।
- तेंदू के पत्ते का उपयोग बीड़ी बनाने में किया जाता है।
- इसकी पत्तियों को 'टिमरू' कहा जाता है।
- 1974 में टिमरू (तेंदू पत्ता) के पेड़ का राष्ट्रीयकरण हुआ।

5. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **वन विभाग द्वारा जारी रिपोर्ट (2024-25) के अनुसार वनों की स्थिति -** राज्य में कुल अभिलिखित वन क्षेत्र (Recorded Forest Area)- 33014 वर्ग किमी. है जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का **9.64 प्रतिशत** है।

6. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- ISFR-2023 के अनुसार 2021 की तुलना में राजस्थान में वन क्षेत्र में नगण्य (0.01%) वृद्धि दर्ज की गई।

7. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **खस घास**- यह सुगंधित घास है, जो शरबत बनाने, इत्र व टाटियाँ/पर्दे बनाने में उपयोगी होती है।

  सर्वाधिक- भरतपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक एवं अजमेर।
- **धामण**- दुधारू पशुओं के लिए उपयोगी। सर्वाधिक- जैसलमेर।
- **बुर घास**- यह सुगंधित घास है। सर्वाधिक- बीकानेर।
- **मोचिया घास**- यह तालछापर अभयारण्य में पाई जाती है। सर्वाधिक- चूरू।

8. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **राजस्थान वन नीति-2023**- 5 जून, 2023 को जारी।

  इस नीति के तहत् राज्य में वन, वन्य जीवन, जैव-विविधता और संरक्षित क्षेत्रों के सतत् प्रबंधन को बढ़ावा देना और आगामी **20 वर्षों** (वर्ष 2040 तक) में वनस्पति आवरण को राज्य के भौगोलिक क्षेत्र के **20%** तक बढ़ाना।

कलाम ACADEMY

9. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान के वनों का वर्गीकरण-**

वनों के प्रकार	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रतिशत	सर्वाधिक वन क्षेत्रफल वाला जिला
आरक्षित वन (Reserved)	12198.71	36.95%	उदयपुर, चित्तौड़गढ़
रक्षित वन (Protected)	18631.13	56.43%	बाराँ, करौली
अर्गीकृत वन (Unclassified)	2184.16	6.62%	बीकानेर, श्रीगंगानगर
कुल वन	33014	100%	उदयपुर, बाराँ

10. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **वन विभाग, राजस्थान के प्रशासनिक प्रतिवेदन 2023 के अनुसार राज्य के न्यूनतम वन क्षेत्र (प्रतिशत) वाले जिले-**

  1. चूरू (0.57%) 2. जोधपुर (1.08%)
  3. नागौर (1.36%) 4. जैसलमेर (1.58%)

11. उत्तर (1)

व्याख्या:-

धोकड़ा के वन-

- रेगिस्तानी क्षेत्र को छोड़कर शेष सम्पूर्ण राजस्थान में धोकड़ा के वन पाए जाते हैं। अत: धोकड़ा के वनों का विस्तार राजस्थान में सर्वाधिक है।
- ये वन राजस्थान में 240 से 760 मीटर की ऊँचाई के मध्य कोटा, बूँदी, सवाईमाधोपुर, जयपुर, अलवर, उदयपुर, अजमेर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ आदि जिलों में मिलते हैं।
- इन वनों में सर्वाधिक वृक्ष धोकड़ा के मिलते हैं। अन्य वृक्षों में पलाश, अडूसा मिलते हैं।
- धोंकड़ा को धोंक के नाम से भी जानते हैं। धोंक की लकड़ी मजबूत होती है। इसको जलाकर कोयला (चारकोल) बनाया जाता है।

12. उत्तर (2)

व्याख्या:-

उपोष्ण कटिबन्धीय सदाबहार वन/उपोष्ण पर्वतीय वन :-

- ये वन राजस्थान में **केवल सिरोही जिले के आबू पर्वतीय क्षेत्र** में पाये जाते हैं।
- ये वन सदाबहार वन है तथा ये ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ही मिलते हैं। इनमें सालभर हरियाली बनी रहती है।
- ये **राजस्थान के सबसे कम क्षेत्रफल** पर पाये जाने वाले वन हैं जो राजस्थान के कुल वन क्षेत्र के आधे प्रतिशत से भी कम (0.39%) है।
- इन वनों में आम, बाँस, नीम, सागवान आदि के वृक्ष पाये जाते है।
- यह राजस्थान में लगभग 52 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पाये जाते हैं।
- ये वन 1070 से 1375 मीटर की ऊँचाई पर पाये जाते हैं।
- यहाँ वार्षिक वर्षा लगभग 150 सेमी. है।

13. उत्तर (2)

व्याख्या:-

पलाश के वन-

- ये वन पहाड़ियों के मध्य के कठोर, पथरीले व पठारी धरातल पर अलवर, अजमेर, सिरोही, उदयपुर, पाली, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़ आदि जिलों में विस्तृत हैं।
- पलाश को जंगल की आग भी कहते हैं।

14. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **भारत वन स्थिति रिपोर्ट-2023 के अनुसार राजस्थान में वनों की स्थिति**

	18 वीं ISFR 2023 की रिपोर्ट के अनुसार	2021 की तुलना में 2023 में कमी/वृद्धि
1. वन क्षेत्र (अभिलेखित वन)	9.60% (32869 वर्ग किमी.)	0.01% वृद्धि (6 वर्ग किमी.)
2. वृक्षावरण	3.16% (10841.12 वर्ग किमी.)	4.61% वृद्धि (478.26 वर्ग किमी.)
3. वनावरण	4.83% (16548.21 वर्ग किमी.)	0.53% कमी (80.83 वर्ग किमी.)
4. वनावरण+ वृच्छावरण	8.00% (27389.33 वर्ग किमी.)	1.46% वृद्धि (394.46 वर्ग किमी.)

15. उत्तर (2)

व्याख्या:-

भारत वन स्थिति रिपोर्ट 2023 के अनुसार-

- **राजस्थान में अधिकतम वनावरण क्षेत्रफल (वर्ग किमी.) वाले जिले-**

1. उदयपुर (2766.30) 2. अलवर (1198.74)
3. प्रतापगढ़ (996.86) 4. चित्तौड़गढ़ (988.08)
5. बाराँ (975.13)

कलाम ACADEMY

16. उत्तर (2)

व्याख्याः-

शुष्क सागवान के वन-

- 250 से 450 मीटर ऊँचाई वाले क्षेत्रों में दक्षिणी राजस्थान के उदयपुर, डूँगरपुर, झालावाड़, चित्तौड़गढ़, बारां जिलों में।
- यह वन सर्वाधिक बाँसवाड़ा वन खंड में पाये जाते हैं।
- इन वनों में सागवान के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। अन्य वृक्षों में तेंदू, धावडा, गुरजन, हल्दू, खैर, सेमल, रीठा, सिरिस, बहेड़ा, इमली आदि के वृक्ष मिलते हैं।
- यहाँ स्थित खैर के वृक्ष से कत्था प्राप्त किया जाता है।

17. उत्तर (4)

व्याख्याः-

ओरण-

- पश्चिमी राजस्थान में **पर्यावरण संरक्षण की पवित्र उपवन परम्परा** अर्थात् ओरण राजस्थान में पवित्र वन क्षेत्र है जो सामुदायिक रूप से संरक्षित है और **स्थानीय देवी-देवताओं को समर्पित** है। अत: ये सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है इन पवित्र उपवनों को राजस्थान में **ग्रामीण समुदायों द्वारा पारम्परिक रूप से प्रबंधित और संरक्षित** किया जाता है।
- राजस्थान का **सबसे बड़ा ओरण करणी माता मंदिर** के आस-पास का क्षेत्र **(देशनोक, बीकानेर)** में स्थित है।
- माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा **18 दिसम्बर, 2024 को पारिस्थितिकी व सांस्कृतिक** दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ओरण भूमि के संरक्षण हेतु उच्च स्तरीय समिति के गठन का निर्देश दिया गया।
- राजस्थान हाईकोर्ट के **पूर्व न्यायाधीश जे.आर. गोयल की अध्यक्षता** में ओरण भूमि को सुरक्षित रखने हेतु केन्द्रीय अधिकार प्राप्त समिति (C.E.C.) का गठन किया गया।

18. उत्तर (3)

व्याख्याः-

सालर वन (बोसवालिया सेराता)-

- ये वन अरावली के 450 मीटर से अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ी क्षेत्रों में उदयपुर, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, सिरोही, पाली, अजमेर, जयपुर, अलवर व सीकर जिलों में मिलते हैं।
- ये वन अरावली पहाड़ियों की उच्च श्रेणियों में पाये जाते हैं।
- इन वनों में सर्वाधिक वृक्ष सालर के मिलते हैं तथा अन्य वृक्षों में धोक, कठीरा, धावड़ आदि मिलते हैं।
- सालर के वृक्ष से गोंद प्राप्त होता है। इसकी लकड़ी पैकिंग के डिब्बे बनाने के काम आती है।

खैर के वन-

- ये वन राजस्थान के दक्षिणी पठारी भाग (झालावाड़, कोटा, बारां, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़) में पाये जाते हैं।
- इन वनों में खैर के साथ बेर, धोकड़ा, अरुंज आदि के वृक्ष मिलते हैं।
- खैर के वृक्ष से कत्था प्राप्त किया जाता है।

19. उत्तर (1)

व्याख्याः-

उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वन-

- **प्रमुख वृक्ष** - उष्ण कटिबन्धीय कंटीले वनों में मिलने वाली मुख्य वृक्षों में रोहिड़ा, खेजड़ी, धोकड़ा, जाल, बेर, बबूल, कैर, फोग, लाना, अरण, थोर, झड़बेरी व नीम आदि हैं।

20. उत्तर (1)

व्याख्याः-

वनस्पति एवं वन्य जीवों के संरक्षण संबंधी कानून/अधिनियम-

- राजस्थान वाईल्ड लाईफ बोर्ड-1955
- राजस्थान वन्य पक्षी संरक्षण अधिनियम-1951
- वन्यजीव सरंक्षण अधिनियम-1972
- बाघ संरक्षण अधिनियम-1973
- मगरमच्छ संरक्षण अधिनियम- 1975
- वन संरक्षण अधिनियम-1980 (संशोधित 1988)
- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम- 1986
- हाथी संरक्षण अधिनियम- 1992
- जैव विविधता संरक्षण अधिनिमय-2002
- डॉल्फिन संरक्षण अधिनियम- 2009
- ऊँट संरक्षण अधिनियम- 2014
- गोडावण संरक्षण अधिनियम-2014

21. उत्तर (3)

व्याख्याः-

राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता विकास परियोजना (RFBDP)

- राजस्थान वानिकी एवं जैव विविधता विकास परियोजना **फ्रांस** की एजेंसी फ्रांसेइस डी डेवलपमेंट **(AFD)** द्वारा समर्थित एक पहल है जो **2023-24 से 2030-31** तक कुल 8 वर्षों तक चलेगी।
- **वित्तीय सहयोग**- AFD(70%), राज्य (30%)

कलाम ACADEMY

- यह परियोजना राजस्थान के **13 जिलों**- अलवर, बाराँ, भीलवाड़ा, भरतपुर, बूँदी, दौसा, धौलपुर, जयपुर, झालावाड़, करौली, कोटा, सवाईमाधोपुर और टोंक में क्रियान्वित की जा रही है , जिसका उद्देश्य राज्य के पूर्वी क्षेत्र में जैव विविधता का संरक्षण और पर्णपाती वन संसाधनों में वृद्धि करना है।
- RFBDP का प्रमुख उद्देश्य जैविक विविधता का संरक्षण और संसाधनों का संवर्धन करना है ताकि जलवायु परिवर्तन से निपटा जा सके जो समुदाय सशक्तिकरण के माध्यम से किया जायेगा।

22. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **अमृता देवी बिश्नोई पुरस्कार**- प्रारम्भ- 1994, यह पुरस्कार वृक्षारोपण, वन संरक्षण तथा वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रदान किया जाता है।

23. उत्तर (2)

व्याख्या:-

वन्यजीव संरक्षण स्थल	मुख्य जीव
कुंभलगढ़ अभयारण्य	भेड़िया, बाघ, भालू, चिंकारा, नीलगाय
सरिस्का अभयारण्य	हरे कबूतर, रीसस बन्दर, बाघ, सांभर
तालछापर अभयारण्य	काले हिरण व कुरंजा पक्षी
जयसमंद अभयारण्य	जलीय जीव, रींछ, तेंदुआ, जंगली सूअर

24. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- वर्तमान में राजस्थान में कुल 37 कंजर्वेशन रिजर्व स्थित है।
- रणखार कंजर्वेशन रिजर्व, जंगली गधों हेतु प्रसिद्ध है।
- आसोप कंजर्वेशन रिजर्व, भीलवाड़ा (नवीनतम 37वाँ कंजरर्वेशन रिजर्व है।)
- माही सागर कंजर्वेशन रिजर्व, बड़ी झील (उदयपुर)।

25. उत्तर (2)

व्याख्या:-

वन्यजीव शुभंकर		जिला
जलपीपी	-	बाँसवाड़ा
खड़मोर	-	अजमेर
चीतल	-	जयपुर
राजहंस	-	नागौर
मोर	-	भीलवाड़ा

26. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान के प्रमुख रामसर साईट-

- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - भरतपुर (1982)
- सांभर झील - जयपुर (1990)
- खिंचन - फलौदी (जून 2025)
- मेनार - उदयपुर (जून 2025)

नोट :- स्टेट वेटलैंड अथॉरिटी राजस्थान ने जुलाई, 2023 तक **44** वेटलैण्ड साइट्स अधिसूचित की है। जिन्हें बढ़ाकर 100 करने का लक्ष्य है। इनमें सबसे अधिक बाराँ (12) जिले में है।
राजस्थान सरकार द्वारा अधिसूचना जारी कर वर्ष 2018 में **स्टेट वेटलैंड अथॉरिटी** की स्थापना की गई।

27. उत्तर (1)

व्याख्या:-

राजस्थान वानिकी एवं जैव-विविधता परियोजना-

- **सहायता**- जापान इंटरनेशनल को-ऑपरेशन एंजेंसी (JICA)।
- **उद्देश्य**- वृक्षारोपण, वन्य जीव एवं जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा। मिट्टी एवं जल संरक्षण।
  पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक-आर्थिक विकास।
  गरीबी उन्मूलन एवं आजीविका सुधार कार्यक्रम
- **प्रथम फेज**- 2003-2010
- **द्वितीय फेज**- 2011-2019 (**10 मरुस्थलीय** - सीकर, झुन्झुनूं, चूरू, जालौर, बाड़मेर, जोधपुर, पाली, नागौर, जैसलमेर व बीकानेर एवं **5 गैर मरुस्थलीय**- बाँसवाड़ा, डूंगरपुर, भीलवाड़ा, सिरोही व जयपुर)
  राज्य के 15 जिलों तथा 7 वन्य जीव संरक्षित क्षेत्रों (कुम्भलढ़, फुलवारी की नाल, जयसमन्द, सीतामाता, बस्सी, कैला देवी एवं रावली-टाडगढ़) में JICA की सहायता से वर्ष में संचालित की गई।

28. उत्तर (3)

व्याख्या:-

वृक्षारोपण कार्यक्रम-

- **मरुस्थल वृक्षारोपण कार्यक्रम**- शुरूआत- 1977-78
  जिले - 10
  वित्तीय भागीदारी- केन्द्र (75%), राज्य (25%)
  नोट- मरुस्थल विकास कार्यक्रम (DDP)
  प्रारम्भ- 1977-78
  जिले- 16
  वित्तीय सहयोग- केन्द्र (75%), राज्य (25%)

29. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **बाघदर्रा क्रोकोडाइल (मगरमच्छ) संरक्षण पार्क आरक्षिति-** गिर्वा (उदयपुर)
- **ग्रासलैंड संरक्षण और घड़ियाल संरक्षण केन्द्र (घड़ियाल रियरिंग सेंटर)-** पालीघाट (सवाईमाधोपुर)

30. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- राजस्थान की पाँचवीं बाघ परियोजना धौलपुर-करौली बाघ परियोजना अगस्त, 2023 में शुरू की गई, इस परियोजना के तहत् केलादेवी अभयारण्य, राष्ट्रीय घड़ियाल अभयारण्य एवं कुदिन्ना रक्षित वनखण्ड क्षेत्र सम्मिलित किया गया।

31. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- राजस्थान स्थित वन्य जीव संरक्षण स्थल का दक्षिण से उत्तर की ओर व्यवस्थित क्रम है- सीतामाता (प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ व उदयपुर) - रामगढ़ विषधारी (बूँदी) - रामसागर वन विहार (धौलपुर) - केवलादेव (भरतपुर)।

32. उत्तर (3)

व्याख्याः-

केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान- स्थापना- 1982

- इसको घना पक्षी विहार के नाम से भी जानते हैं। यह राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर जिले में स्थित है। इसमें बगुले, बया, कोयल, बटेर आदि पक्षी मिलते हैं एवं शीत ऋतु में यहाँ साइबेरियन सारस/क्रेन आते हैं।
- इस उद्यान को 1985 में यूनेस्को द्वारा विश्व प्राकृतिक धरोहर घोषित किया।
- इसका कुल क्षेत्रफल 28.73 वर्ग किमी. है।
- इसे **पक्षियों का स्वर्ग** कहा जाता है। यह यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में दर्ज है।
- यह गम्भीरी व बाणगंगा नदियों के संगम पर अवस्थित है।
- इस अभयारण्य के पक्षियों की विभिन्न प्रजातियों पर **मार्टिन इवान्स** ने **'भरतपुर बर्ड पैराडाइज'** पुस्तक लिखी है।

33. उत्तर (1)

व्याख्याः-

राजस्थान वनीकरण एवं जैव विविधता संरक्षण कार्यक्रम (RABCP)

- यह कार्यक्रम 2021 से शुरू किया गया जिसमें आर्थिक सहायता **जापान अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी/JICA** से प्राप्त हो रही है।
- इसमें 10 मरुस्थलीय जिले (गंगानगर, हनुमानगढ़ के अलावा) तथा 9 गैर मरुस्थलीय जिले (जयपुर, अजमेर, राजसमंद, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बाँसवाड़ा) शामिल हैं।

34. उत्तर (2)

व्याख्याः-

आखेट निषेध क्षेत्र :-

- वन्य जीव संरक्षण की दिशा में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 की धारा 37 के तहत राजस्थान में 26720 वर्ग किमी. क्षेत्र में 33 आखेट निषिद्ध क्षेत्र है। इन क्षेत्रों में शिकार करना कानूनी रुप से प्रतिबंधित होता है।
- राज्य में सर्वाधिक आखेट निषेध क्षेत्र वाला जिला- जोधपुर (7)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राज्य का सबसे बड़ा आखेट निषेध क्षेत्र- कोटसर सम्वतसर (चुरु-बीकानेर)
- राज्य का सबसे छोटा आखेट निषेध क्षेत्र -कनक सागर (बूँदी)

35. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- बाघदर्रा क्रोकोडाइल (मगरमच्छ संरक्षण पार्क) - उदयपुर
- खड़मोर ब्रीडिंग सेन्टर - राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र के बारां जिले की अंता तहसील के सोरसन संरक्षित वन क्षेत्र में खरमोर ब्रीडिंग सेंटर बनाया जा रहा है।
- कुरजां संरक्षण रिजर्व -राजस्थान के जोधपुर जिले के खींचन गांव में स्थित है। यह कुरजां पक्षी के लिए भारत का पहला संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया है।

36. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- प्रश्न में सूची-I (धार्मिक स्थल) व सूची-II (जिला) का मिलान करवाया गया है जिसका सही मिलान निम्नानुसार है-

A. भद्रकाली मंदिर - हनुमानगढ़
B. सालासर बालाजी - चरू
C. स्यानण का मंदिर - चूरू
D. भांडाशाह जैन मंदिर - बीकानेर

कलाम ACADEMY

37. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- खुदाबख्श बाबा की दरगाह सादड़ी में स्थित है।
- घाणेराव में मूँछाला महावीर मंदिर, सूर्य नारायण मंदिर, सोमनाथ मंदिर, पार्श्वनाथ जैन मंदिर, नाडोल जैन मंदिर, शांतिनाथ जैन मंदिर, गजानंद मंदिर स्थित है।
- निम्बों का नाथ महादेव मंदिर (फालना)

38. उत्तर (2)

व्याख्याः-

- **भीनमाल**- 7वीं शताब्दी ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआनचुआंग) यहाँ आया। उसने अपनी यात्रा वृत्तांत में भीनमाल का गुर्जरत्रा देश की राजधानी के रूप में उल्लेख किया है।

39. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- जोधपुर में सचिया माता का मन्दिर, पीपला माता का मन्दिर, ओसिया में जैन मन्दिर, हरिहर मन्दिर, महा मन्दिर, रावण मन्दिर, आई माता का मन्दिर (बिलाड़ा), कुँज बिहारी मन्दिर, मुरलीमनोहर मन्दिर, चामुण्डा देवी मन्दिर (मेहरानगढ़), 33 करोड़ देवी-देवताओं की साळ (मन्डौर) व गंगश्याम व घनश्याम मन्दिर स्थित है।
- निम्बों का नाथ महादेव मंदिर (फालना, पाली) में स्थित है।

40. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- **चौमुखा मंदिर**- पाली जिले में स्थित यह मंदिर रणकपुर जैन मंदिर समूह का भाग है। इसे आचार्य सोमसुन्दर सूरीजी की प्रेरणा से धरणाशाह एवं रत्नाशाह नामक दो भाइयों ने बनवाया था। मन्दिर का निर्माण कार्य देपाक नामक मुख्य शिल्पी के मार्गदर्शन में विक्रम सम्वत् 1496 में सम्पन्न हुआ था। चौमुखा मन्दिर को आदिनाथ मन्दिर, त्रैलोक्य दीपक, त्रिभुवन विहार, धरण विहार, खम्भों का अजायबघर आदि नामों से भी जाना जाता है। इस मन्दिर में कुल 24 मण्डल, 85 शिखर एवं 1444 अलंकृत स्तम्भ कला की उत्कृष्टता का बखान करते प्रतीत होते हैं। यह मन्दिर प्रथम जैन तीर्थकर आदिनाथ को समर्पित है। अतः इसके गर्भगृह में आदिनाथ (ऋषभदेव) की 4 प्रतिमाएं चारों दिशाओं की ओर उन्मुख होती हुई स्थापित है। अतः इस मन्दिर को चतुर्मुख मन्दिर या चौमुखा मन्दिर के नाम से भी जाना जाता है।

41. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- **किराडू के मंदिर**- किराडू का प्राचीन नाम किराट कूप था जो बाड़मेर जिले के हाथमा गाँव के पास स्थित है। मंदिर निर्माण में कामुकता के कारण किराडू को 'राजस्थान का खजुराहो' भी कहा जाता है।
- **देलवाड़ा के जैन मंदिर**- यहाँ के जैन मन्दिर स्थापत्य कला एवं मूर्तिकला की दृष्टि से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। यहाँ पर पाँच मन्दिरों का समूह है। इस समूह के पाँच मन्दिर - 1. विमलशाही मन्दिर, 2. लूणवसही मन्दिर, 3. पार्श्वनाथ या चौमुखा मन्दिर, 4. पीतलहर मन्दिर एवं 5. महावीर स्वामी मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में राजस्थान- गुजरात की सोलंकी (चालुक्य) शिल्पकला शैली के प्रमुखता से दर्शन होते हैं।
- **हल्देश्वर महादेव मंदिर**- बाड़मेर के पिपलूद गाँव में छप्पन की पहाड़ियों में स्थित मंदिर, जिसे राजस्थान का लघु माउंट कहा जाता है।
- **एकलिंगजी**- उदयपुर के कैलाशपुरी गाँव में स्थित एकलिंगजी मेवाड़ के गुहिलोत/सिसोदिया राजवंश के आराध्य देव हैं। एकलिंगजी के उक्त मंदिर का निर्माण बप्पा रावल ने करवाया था।

42. उत्तर (4)

व्याख्याः-

- भरतपुर - राजस्थान का सिंहद्वार
- उदयपुर - पूर्व का वेनिस
- बूँदी - सिटी ऑफ स्टेपवेल्स
- भीलवाड़ा - टेक्स टाइल सिटी
- जालौर - ग्रेनाइट सिटी

43. उत्तर (3)

व्याख्याः-

- **बाडोली**- बाड़ोली कोटा के लगभग 50 किलोमीटर दक्षिण में चित्तौड़गढ़ जिले में रावतभाटा कस्बे के पास स्थित है। यहाँ पर 8वीं से 12वीं शताब्दी के मन्दिर एक सूमह के रूप में विद्यमान हैं। बाडोली 9वीं-10वीं शताब्दी ईस्वी में शैव उपासना का प्रमुख केन्द्र था। लगभग 10वीं शताब्दी में निर्मित, घटेश्वर मंदिर भगवान् शिव को समर्पित है। यहाँ महाराणा प्रताप की छतरी है।

कलाम ACADEMY

44. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **अब्बदुला पीर दरगाह-** यह बोहरा मुस्लिम संत अब्दुल रसुल की मजार है। यह मजार बाँसवाड़ा में स्थित है।
- हजरत कमरूद्दीनशाह की दरगाह झुँझुनूँ के नेहरा पहाड़ की तलहटी में खेतड़ी महल के पश्चिम में स्थित है।
- अजमेर में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह स्थित है।
- बड़े पीर साहब की दरगाह नागौर में स्थित है।

45. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **सीताबाड़ी का मंदिर-** सीताबाड़ी का प्रसिद्ध मंदिर बाराँ जिले में स्थित है। यह मंदिर सीतामाता व लक्ष्मण को समर्पित है। यहाँ सहरिया जनजाति का सीताबाड़ी का प्रसिद्ध मेला लगता है। यह सहरिया जनजाति का कुंभ माना जाता है। यह स्थान लव-कुश की जन्मस्थली भी मानी जाती है।

46. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- बाराँ में स्थित मन्दिर- गड़गज मन्दिर (अटरू), भण्डदेवरा का शिव मन्दिर (हाड़ौती का खजुराहो), सीताबाड़ी का मन्दिर, ब्राह्मणी माता मंदिर (सोरसेन), काकूनी धाम, गड़गच्च देवालय (अटरू), फूलदेवरा का शिवालय/ मामा-भांजा मंदिर, कल्याण राय का मंदिर, तेली मंदिर, प्यारेरामजी मंदिर।
- भरतपुर में स्थित मन्दिर- गंगा मन्दिर, **ऊषा मन्दिर** व लक्ष्मण मन्दिर स्थित है।
- करौली में स्थित मन्दिर- **कैलादेवी मन्दिर**, श्रीमहावीरजी मन्दिर, मदनमोहन मन्दिर (गौड़ीय सम्प्रदाय) व मेंहदीपुर बालाजी मन्दिर (दौसा-करौली सीमा पर)।
- सवाईमाधोपुर में स्थित मन्दिर- त्रिनेत्र गणेश मन्दिर, अमरेश्वर महादेव मंदिर (रणथम्भौर), **घुश्मेश्वर महादेव मंदिर (भगवान सिंह का 12वाँ ज्योतिर्लिंग)**, काला-गौरा भैरू मंदिर, चमत्कार जी जैन मंदिर (आलनपुर)।
- बीजासन माता मंदिर बूँदी में स्थित है।

47. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **हर्षद्माता का मंदिर-** इस मंदिर के भीतर प्रतिष्ठित देवी हर्षत माता का प्राचीन नाम हरिसिद्धि था। मूलत: यह एक विष्णु मंदिर था। हर्षत माता के मन्दिर का निर्माण 8वीं-9वीं शताब्दी में चौहान वंशीय राजा चाँद ने करवाया था। यह मन्दिर 11वीं शताब्दी में महमूद गजनवी के आक्रमण से क्षतिग्रस्त हुआ था।

48. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- नारायणी माता मन्दिर (बरवा डूँगरी) अलवर जिले में स्थित है।

49. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- प्रश्न में सूची-I (धार्मिक स्थल) व सूची-II (जिला) का मिलान करवाया गया है जिसका सही मिलान निम्नानुसार है-

A. देवनारायण मन्दिर जोधपुरिया - टोंक
B. बागोर साहिब गुरूद्वारा - भीलवाड़ा
C. हर्षनाथ मन्दिर - सीकर
D. भर्तृहरि मन्दिर - अलवर

50. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- स्वर्ण नगरी, किले व हवेलियों का शहर - जैसलमेर
- सुवर्ण नगरी, जालहुर, ग्रेनाइट सिटी - जालौर
- सूर्य नगरी- जोधपुर
- गुलाबी नगरी, राजस्थान का पेरिस- जयपुर

51. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- फलौदी (पार्श्वनाथ) - फलवर्द्धिका, विजयपुरा, विजयनगर
- किशनगढ़ - कृष्णगढ़
- हनुमानगढ़ - भटनेर
- खाटु - खट्वकूप, खट्टकऊ

52. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **चारभुजा मंदिर-** यह राजसमंद के गढ़बोर में स्थित है। यह विष्णु को समर्पित मंदिर है। इस मंदिर का जीर्णोद्धार वि. संवत् 1501 में मेवाड़ के महाराणा कुंभा के शासनकाल में हुआ था। इस मंदिर की गिनती मेवाड़ के प्राचीन चार धामों में होती है। मेवाड़ के चार धाम कैलाशपुरी, केसरियाजी, नाथद्वारा तथा चारभुजा है।

कलाम ACADEMY

53. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **नाकोड़ा-** नाकोड़ा जैन संप्रदाय का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है। यह स्थान मेवा नगर के नाम से जाना जाता है। यहाँ पर तीन भव्य जैन मंदिर हैं जो तीर्थंकर आदिनाथ/ऋषभदेव (सबसे बड़ा) पार्श्वनाथ और शांतिनाथजी को समर्पित हैं। यहाँ प्रतिवर्ष पौष बदी दशमी (दिसम्बर माह) को भगवान् पार्श्वनाथ के जन्म दिवस पर नाकोड़ा ट्रस्ट की ओर से विशाल मेले का आयोजन होता है।

54. उत्तर (3)

व्याख्या:-

A. देवीकुण्ड - बीकानेर
B. अन्देश्वर पार्श्वनाथजी - बाँसवाड़ा
C. काला गोरा भैरव - सवाईमाधोपुर
D. अमरसागर - जैसलमेर

55. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- 17 जुलाई, 2025 को नई दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में स्वच्छ भारत मिशन 2.0 के तहत स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।
- डूंगरपुर को 'सुपर स्वच्छता लीग' सम्मान दिया गया। [यह पुरस्कार उन शहरों को दिया जाता है जो गत तीन वर्षों में कम से कम एक बार टॉप तीन में रहे हो तथा मौजूदा वर्ष में अपनी श्रेणी (20 से 50 हजार जनसंख्या) के शीर्ष 200 शहरों में शामिल हो।]
- जयपुर ग्रेटर को 'प्रोमिसिंग स्वच्छ शहर' का सम्मान दिया गया।
- राजस्थान के 12 शहर देश के शीर्ष 100 स्वच्छ शहरों में शामिल है। (उदयपुर, जयपुर ग्रेटर तथा हैरिटेज, कोटा नॉर्थ व साउथ, जोधपुर नॉर्थ व साउथ, बीकानेर, भीलवाड़ा, अलवर, अजमेर, सीकर)

56. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- जुलाई 2025 में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस संजीव प्रकाश शर्मा को राजस्थान स्थानांतरित किया तथा राजस्थान हाईकोर्ट के जस्टिस श्री चन्द्रशेखरन को बोम्बे हाईकोर्ट में स्थानान्तरित किया।

57. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- 27 जुलाई को जयपुर के मदाऊ स्थित जगतगुरू रामानंदाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय परिसर में 76वें वन महोत्सव का आयोजन किया गया।
- इस अवसर पर उपकार संस्था, अलवर को 'संस्थागत श्रेणी' में वर्ष-2023 का अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार प्रदान किया गया।

58. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- **'मिशन हरियालो राजस्थान 2.0'** के तहत हरियाली तीज के अवसर पर जयपुर जिला प्रशासन द्वारा एक ही दिन में 42 लाख 2 हजार 139 पौधारोपण कर प्रदेश के सभी 41 जिलों में अव्वल स्थान प्राप्त किया।
- हरियालो राजस्थान के तहत जिलेवार पौधारोपण में जयपुर (66 लाख), उदयपुर तथा जैसलमेर क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान पर हैं।

नोट- मिशन हरियालो राजस्थान 2.0 के तहत् 10 करोड़ पौधे लगाने जाने का लक्ष्य रखा गया।

59. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- केन्द्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी ने 19 जुलाई, 2025 को राजस्थान के फलोदी की बाप तहसील में जेलेस्ट्रा इंडिया द्वारा विकसित 435 मेगावाट की गौरबिया सौर ऊर्जा परियोजना का उद्घाटन किया।

60. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- दक्षिण कोरिया में आयोजित 32 वीं एशियन जूनियर इण्डिबिजुअल स्क्वैश चैम्पियनशिप में राजस्थान के अनाहत सिंह व आर्यवीर दीवान ने स्वर्ण पदक जीता।

कलाम ACADEMY

61. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- कार्ल युंग ने व्यक्तित्व का अंतर्मुखी-बहिर्मुखी वर्गीकरण दिया था। वह व्यक्ति जो अपने मनोभाव किसी से साधा ना करे अंतर्मुखी है, वहीं बहिर्मुखी वह है जिसका भाव संप्रेषण उच्च स्तर का हो।

62. उत्तर (4)

व्याख्या:-

पिकनिक प्रकार Pyknic Type	▪ छोटा कद, गोलाकार, भारी शरीर, सामाजिक, खानपान के शौकीन, खुशमिजाज। ▪ साइक्लोइड (Cycloid) स्वभाव। ▪ उत्साह विषाद (Maniac Depression) की संभावना।
एस्थेनिक प्रकार Asthenic Type	▪ लंबा कद, दुबला पतला शरीर, सामान्य से कम वजन। ▪ चिड़चिड़ा स्वभाव, सामाजिक उत्तरदायित्व से दूरी। ▪ सिजोइड (Schizoid) चित्तप्रकृति/स्वभाव। ▪ मनोविदालिता की संभावना।
एथलेटिक Athletic	▪ सुडौल, विकसित, गठीला शरीर, संतुलित कद। ▪ स्वभाव में न अधिक चंचलता न ही मंदन। ▪ आसानी से समायोजन का कौशल ▪ सामाजिक प्रतिष्ठा भी मिलती है।
डाइप्लास्टिक Dysplastic	▪ ऐसे व्यक्तियों में उपर्युक्त एक भी गुण नहीं मिलता बल्कि इनका मिला जुला स्वरूप दृष्टिगत होता है।

63. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- रेमण्ड कैटल के कारक विश्लेषण के आधार पर 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली दी। यह हाई-स्कूल के बच्चों से व्यस्कों तक के लिये प्रयोग में आती है।

64. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **(MMPI) :- मिनेसोटा बहुपक्षीय व्यक्तित्व सूची :**
- इसका निर्माण 1940 के दशक में हैथवे और मैकिन्लै नामक दो वैज्ञानिकों ने मिनेसोटा विश्वविद्यालय में किया।
- वर्ष 1989 में इसमें व्यापक परिवर्तन देखने को मिले। उसके बाद से इसका दूसरा संस्करण(MMPI-2) प्रचलन में है।
- इसमें 567 कथन है, जिनके उत्तर सही गलत के रूप में व्यक्ति को देने होते हैं।
- इसमें तीन वैधानिक मापनियाँ (L, F, K) है और मनोरोग से संबंधित 10 उपमापनियाँ है, जिनके आधार पर व्यक्तित्व का मापन किया जाता है।
- मलिक व जोशी ने इसका भारतीय संस्करण जोधपुर बहुपक्षीय व्यक्तित्व मापनी तैयार किया।

65. उत्तर (2)

व्याख्या :

- आलपोर्ट के अनुसार - व्यक्तित्व व्यक्ति में उन मनोदैहिक व्यवस्थाओं का गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।

66. उत्तर (3)

व्याख्या:-

एण्डोमोर्फिक Endomorphic	→	मोटे मृदुल (गोलाकृतिक)	→	शिथिल, सामाजिक, मिलनसार
एक्टोमोर्फिक Ectomorphic	→	पतले लम्बे सुकुमार (लंबाकृतिक)	→	कुशाग्र बुद्धि, कलात्मक व अंतर्मुखी
मीसोमोर्फिक Mesomorphic	→	मजबूत पेशीय समूह (आयताकृतिक)	→	ऊर्जस्वी व साहसी

67. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **प्रक्षेपी तकनीक (Projection Technique) :**

विशेषताएँ :

1. इसका विकास अचेतन अभिप्रेरणा व भावनाओं के मूल्यांकन के लिए किया गया है।
2. उद्दीपक असंगत, अस्पष्ट, अनुपयुक्त होते हैं।
3. कोई अनुक्रिया सही अथवा गलत नहीं होती।
4. साधारणतया व्यक्ति को बताया नहीं जाता। यह एक आत्मनिष्ठ पद्धति है।
5. इस हेतु कुशल परीक्षकों की आवश्यकता पड़ती है।

68. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- फ्रायड ने एक विशेष चिकित्सा पद्धति बनाई। इसका उद्देश्य अचेतन के विचारों को चेतना के स्तर पर लाना था ताकि लोग अधिक व्यवस्थित व समायोजित जीवन जी सकें। फ्रायड ने माना कि व्यक्तित्व संरचना की तीन इकाईयां है-

इदम् - अहम् - पराहम्

69. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- पॉल कॉस्टा व रॉबर्ट मेक्रे ने व्यक्तित्व का पंचकारक मॉडल दिया। इसके पक्ष इस प्रकार है –

1. अनुभवों के लिये खुलापन
2. सहमतिशीलता
3. अंतर्विवेकशीलता
4. बहिर्मुखता
5. तंत्रिकातापिता

70. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- प्रसंगात्मक आत्म बोध परीक्षण बच्चों पर नहीं किया जा सकता।
- 3-10 वर्ष के बच्चों के लिए लियोपोल्ड बैलक ने 1948 में **CAT : Children Appreciation Test** का निर्माण किया।
- इस परीक्षण में 10 कार्ड उपयोग में लिये जाते है। इसमें चित्र में दिखाई दिये जाने वाले मानवों को जानवर के चित्रों से बदल दिया जाता है।

71. उत्तर (1)

व्याख्या :

- व्यक्तित्व जैविक के साथ पर्यावरणीय कारकों से भी प्रभावित होता है।
- व्यक्तित्व समस्त शारीरिक, जन्मजात तथा अर्जित प्रवृत्तियों का योग है।
- व्यक्तित्व में आंतरिक तथा बाहरी दोनों पक्षों का समान रूप से समावेश होता है।
- व्यक्तित्व की कुछ विशेषताएँ इस अर्थ में गत्यात्मक होती है कि वे स्थिति के अनुसार परिवर्तित एवं अनुकूलनशील होती है।

72. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- व्यक्तित्व की व्यवहारात्मक विधियाँ निम्नलिखित हैं –

A. साक्षात्कार
B. प्रेक्षण
C. नाम निर्देशन
D. निर्धारण
E. व्यक्तिगत इतिहास
F. स्थितिपरक परीक्षण

73. उत्तर (1)

व्याख्या :

- बिगी व हण्ट के अनुसार – व्यक्तित्व एक व्यक्ति के संपूर्ण व्यवहार प्रतिमान और इसकी विशेषताओं के योग का उल्लेख करता है।

74. उत्तर (3)

व्याख्या :

व्यक्तित्व की विशेषताओं में निम्न शामिल हैं –

- आत्म चेतना
- सामाजिकता
- विकास की निरंतरता
- दृढ़ इच्छा शक्ति

75. उत्तर (2)

व्याख्या :

- व्यक्तित्व स्व-चेतना है।
- व्यक्तित्व केवल आनुवंशिकता का गुण ना होकर समस्त शारीरिक, जन्मजात तथा अर्जित प्रवृत्तियों का योग होता है जिसमें आंतरिक तथा बाहरी दोनों पक्षों का समान रूप से समावेश होता है।
- व्यक्तित्व हमेशा कुछ निश्चित लक्ष्यों के लिए प्रयत्नशील होता है।
- व्यक्तित्व लगातार पर्यावरण में खुद को समायोजित करता है।

76. उत्तर (2)

व्याख्या :

- विषय आत्मबोध परीक्षण – मॉर्गन व मर्रे
- बालक आत्मबोध परीक्षण – बैलक
- वाक्य-पूर्ति परीक्षण – पाइन व टेंडलर
- एम. एम. पी. आई. – हैथवे व मैकिन्ले

नोट : 3-10 वर्ष के बच्चों के लिए लियोपोल्ड बैलक ने 1948 में **CAT : Children Appreciation Test** का निर्माण किया।

कलाम ACADEMY

77. उत्तर (2)

व्याख्या:-

समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ :

- पर्यावरण व परिस्थिति का ज्ञान व उनके अनुकूल आचरण
- शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक रूप से समायोजित
- आत्मविश्वास व आत्मसंतुष्टि
- धैर्य व सहनशीलता, व्यवहार का लचीलापन
- संघर्षशील संतुलित, एकीकृत एवं समन्वित व्यक्तित्व
- नियमित दिनचर्या, निर्णय लेने की क्षमता
- वास्तविकता को स्वीकार करना

कुसमायोजित व्यक्ति के लक्षण :

- कुण्ठा व भग्नाशा, धैर्य की कमी
- पर्यावरण में साथ अनुकूलन में असक्षम
- भावनात्मक मनोग्रंथियाँ, चिंता, तनाव, अवसाद से ग्रसित
- हीन भावना, अनिश्चित मन व अस्थिर बुद्धि
- घृणा, द्वेष व बदले की भावना
- संवेगात्मक रूप से अस्थिर, अपरिपक्व व असंतुष्ट

78. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- विस्थापन की युक्ति में व्यक्ति कुसमायोजित होने पर अपनी संवेगात्मक प्रतिक्रिया को कमजोर लक्ष्य पर उतारता है।

79. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- साहचर्य सीखने की विधि है जिसका संबंध पावलव से है।

80. उत्तर (4)

व्याख्या :

अच्छे समायोजन की विशेषताएं

- अपनी शक्तियों एवं सीमाओं का ज्ञान
- आकांक्षाओं का पर्याप्त स्तर
- प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझने की क्षमता

नोट : गलतियाँ खोजने की अभिवृत्ति कुसमायोजित व्यक्ति की विशेषता है।

81. उत्तर (1)

व्याख्या :

अच्छे समायोजित व्यक्ति की विशेषताएँ :

- पर्यावरण व परिस्थिति का ज्ञान व उनके अनुकूल आचरण
- शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक रूप से समायोजित
- आत्मविश्वास व आत्मसंतुष्टि
- धैर्य व सहनशीलता, व्यवहार का लचीलापन
- संघर्षशील संतुलित, एकीकृत एवं समन्वित व्यक्तित्व
- नियमित दिनचर्या, निर्णय लेने की क्षमता
- वास्तविकता को स्वीकार करना

82. उत्तर (3)

व्याख्या:-

- **ग्राह्य-ग्राह्य द्वंद्व :** एक प्रकार का द्वंद्व जहाँ सामने आई दोनों परिस्थितियाँ व्यक्ति के अनुकूल हो और उसे इनमें से एक का चयन करना हो।
- **परिहार-परिहार द्वंद्व :** यह ऐसी द्वंद्वात्मक अवस्था है जिसके अंतर्गत व्यक्ति के समक्ष आने वाली दोनों परिस्थितियाँ उसके प्रतिकूल होती हैं अर्थात वह दोनों से परहेज करना चाहता है अथवा पलायन करना चाहता है।
- **ग्राह्य-परिहार द्वंद्व :** यह ऐसी द्वंद्वात्मक अवस्था है जहाँ व्यक्ति के समक्ष आनेवाली दोनों परिस्थितियों में एक उसके अनुकूल हो और एक उसके प्रतिकूल और उसे इनमें से किसी एक को चुनना पड़े।

83. उत्तर (4)

व्याख्या :

कुसमायोजन के निदान की प्रविधियों में शामिल हैं-

- मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण
- निरीक्षण
- रेटिंग स्केल
- चैकलिस्ट

84. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- तादात्मीकरण में व्यक्ति अपने आप को किसी समायोजित व्यक्ति के अनुरूप प्रस्तुत करता है, जबकि वह वैसा नहीं है।

कलाम ACADEMY

85. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- समाज द्वारा स्वीकृत दिशा में अपनी ऊर्जा का स्थानांतरण ही उदात्तीकरण या शोधन है।

86. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **चेतावनी रा चूँगट्या** - इन 13 दोहों (सोरठों) के माध्यम से केसरीसिंह ने स्वाभिमानी शासक फतेहसिंह को दिल्ली दरबार (1903) में जाने से रोका था।

87. उत्तर (2)

व्याख्या:-

- मीसण कृत वीर सतसई स्वाधीनता संग्राम कालीन रचना है।
- वीर सतसई को 1857 की क्रांति का दस्तावेजी काव्य तथा प्रेरणादायी काव्य भी कहा जाता है।

88. उत्तर (1)

व्याख्या:-

- **यादवेन्द्र शर्मा (बीकानेर)**- इनकी प्रमुख रचनाएँ- जमारो, ढोलन कुंजकली (उपन्यास), गुलाबड़ी, चकवे की बात, विडम्बना, लाज राखो राणी सती।

  उपन्यास- संन्यासी और सुन्दरी, दीया जला और दीया बुझा, मिट्टी का कलंक, नया इंसान, पथहीन, ठुकराणी, जनानी ड्योढ़ी, एक और मुख्यमंत्री, ढोलन कुंजकली।

  यादवेन्द्र शर्मा के नाटक- ताश रो घर, महाराजा शेख चिल्ली, मैं अश्वत्थामा, चुप हो जाए पीटर, चार अजूबे, आखिरी पड़ाव, जीमूतवाहन, महाबली बर्बरिक।

  यादवेन्द्र शर्मा की अन्य रचनाएँ- हजार घोड़ों पर सवार, मिट्टी का कलंक, खम्भा अन्नदाता, चांदा सेठाणी, लाज राखो राणी सती, हूँ गोरी किण पीव री, समन्द अर थार, जोग संजोग।

- **चन्द्रप्रकाश देवल**- उदयपुर

  रचनाएँ- पागी, बोलो माधवी, उडीक पुराण, झुरावो, हिरणा! मौन साध वन चारणा (राजस्थानी भाषा), 'कावड़', 'मारग', 'तोपनामा', 'पछतावा', 'मृत्यु किसी को डराती नहीं', 'मृत्यु से मत भागो', 'विपथगा', 'रागविजोग'।

- **नरहरिदास बारहठ**- नागौर

  प्रमुख रचनाएँ- अवतार चरित्र, दशम स्कन्ध पुराण, अहिल्या पूर्व प्रसंग आदि।

- **नथमल जोशी-**

  कहानी संग्रह- परण्योड़ी कंवारी।

  उपन्यास- आभैपटकी, धोरां रौ धोरी, एक बीनणी दो बीन।

  धोरां रौ धणी उपन्यास इटली निवासी डॉ. टेसीटौरी के जीवन पर आधारित है।

  इन्होंने गाँधीजी की जीवनी 'आपणा बापूजी' नाम से लिखी।

89. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- **कवि बांकीदास री ख्यात :**

  बांकीदास ने आयो अंग्रेज मुलक रे ऊपर, गौरा हट जा राज भरतपुर रो नामक गीतों की रचना की।

  बांकीदास की अन्य रचनाएं : सूर छत्तीसी, दातार बावनी, कायर बावनी, सुपह छत्तीसी, चुगल मुख चपेटिका, मान जसो मंडन, जेहड़जस जड़ाव, भुरजल भूषण, हमरोट छतीसी, सिद्धराव छतीसी इत्यादि।

90. उत्तर (4)

व्याख्या:-

- कन्हैयालाल सेठिया का जन्म 1919 में चूरु जिले के सुजानगढ़ कस्बे में हुआ।
- धरती धोरा री, पाथल और पीथल, मींझर, लीलटांस, जमीन रो धणी कुण, सबद, सतवादी, वनफूल (पहला काव्य संग्रह), रमणियै रा सौरठा, धरमजलां, धरकूंचा, कूं-कूं, मायड़ रो हैलो, अघोरीकाल, हेमाणी, लीक लकोलिया इनकी लोकप्रिय कृतियां है।
- 2004 में पद्म श्री सम्मानित।
- 2012 में राजस्थान रत्न से सम्मानित।

कलाम ACADEMY

91. Ans. 4

व्याख्या:-

- अलाउद्दीन खिलजी ने कम वेतन पर विशाल सेना का गठन करने के लिए बाजार व्यवस्था का गठन किया जिसकी जानकारी बरनी की पुस्तक 'तारीख-ए-फिरोजशाही' में मिलती है।
- इस बाजार व्यवस्था में अलाउद्दीन खिलजी ने तीन प्रकार के बाजार-अनाज, कपड़ा व अन्य वस्तु (दास व मवेशी) बनाये। प्रत्येक बाजार के अधीक्षक को शहना कहा जाता था एवं शहना-ए-मंडी के पद पर सर्वप्रथम मलिक कबूल को नियुक्त किया गया था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने बाजार के लिए सात नियम पारित किए थे।

92. Ans. 4

व्याख्या:-

- सल्तनतकाल में नायक-ए-ममलिकात के पद का सृजन बहराम शाह द्वारा किया गया था।
- इस पद पर बहरामशाह ने सर्वप्रथम एतगीन को नियुक्त किया था।

93. Ans. 2

व्याख्या:-

- दिल्ली सुल्तानों के समय में कुछ विशेष करों के अतिरिक्त निम्नलिखित पाँच मुख्य कर थे-

1. उश्र- यह मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर था। जिस भूमि पर प्राकृतिक साधनों से सिंचाई होती थी, वहाँ से पैदावार का 10 प्रतिशत और जिस भूमि पर मनुष्यकृत साधनों से सिंचाई होती थी, वहाँ पर पैदावार का 5 प्रतिशत भूमिकर के रूप में लिया जाता था।
2. खिराज़- यह गैर-मुसलमानों से लिया जाने वाला भूमिकर था, जो पैदावार के एक-तिहाई से लेकर आधे तक विभिन्न सुल्तानों ने लिया था।
3. खम्स- यह युद्ध में लूट से प्राप्त धन में राज्य का भाग होता था। यह कुल लूट का 1/5 भाग होता था तथा 4/5 भाग सैनिकों में बाँट दिया जाता था, लेकिन अलाउद्दीन खिलजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक के समय में कुल लूट का 4/5 भाग राजकोष में जमा करवाया जाता था तथा 1/5 भाग सैनिकों में बाँटा जाता था।
4. जकात- यह मुसलमानों से लिया जाने वाला धार्मिक कर था। यह आय का 2.5 प्रतिशत भाग होता था।

94. Ans. 3

व्याख्या:-

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख अधिकारी एवं उनके कार्य-

विभाग/प्रमुख	प्रमुखाध्यक्ष
बरीद-ए-मुमालिक	गुप्तचर एवं डाक विभाग का अध्यक्ष
सद्र-उस-सुदूर	धर्म विभाग का प्रधान
बारबक	राज दरबार में अनुशासन बनाए रखना
अमीर-ए-हाजिब	शाही दरबार में आने वालों की जाँच पड़ताल कर सुल्तान के समक्ष प्रस्तुत करना
अमीर-ए-शिकार	सुल्तान के शिकार की व्यवस्था करना
सर-ए-जहाँदार	सुल्तान के अंग रक्षकों का अधिकारी
अमीर-ए-आखूर	अश्वशाला का प्रमुख
अमीर-ए-मजलिस	राज दरबार में होने वाले उत्सवों और दावतों का प्रबंध करना
शहना-ए-पील	हस्तिशाला का प्रमुख
दीवान-ए-इस्तिहाक	पेंशन विभाग का अध्यक्ष
दीवान-ए-खैरात	दान विभाग का अध्यक्ष

95. Ans. 3

व्याख्या:-

दिल्ली सल्तनत के प्रमुख अधिकारी एवं उनके कार्य-

- सर - ए - जानदार - सुल्तान के अंगरक्षकों का प्रमुख
- सर - ए - जमादार - सुल्तान के वस्त्रों को प्रबंधक
- बरीद - ए - खास - गुप्तचर विभाग का प्रमुख
- अमीर - ए - आखूर - अश्वशाला का अध्यक्ष

कलाम ACADEMY

96. Ans. 4

व्याख्या:-

- सल्तनत काल में मुशरिफ – ए – मुमालिक महालेखाकार होता था। इसका कार्यालय दीवान – ए – अशरफ कहलाता था।
- मुस्तौफी – ए – मुमालिक महालेखा परिक्षक होता था जिसका कार्यालय दीवान – ए – इस्तीफा कहलाता था।

97. Ans. 3

व्याख्या:-

- सल्तनत काल में तुगलक वंश में वजीरों का प्रभुत्व अत्यधिक बढ़ गया था। इस कारण तुगलक वंश का काल वजीरो का चरमोत्कर्ष काल कहलाता है।
- फिरोजशाह तुगल के वजीर खान-ए-जहां तेलंगानी का मकबरा तेलंगानी प्रथम के पुत्र खान-ए-जहां तेलंगानी-II (जौना शाह) ने करवाया था। यह भारत का प्रथम अष्टभुजाकार मकबरा है।

98. Ans. 2

व्याख्या:-

- सल्तनतकाल में मसाहत नामक प्रणाली को अलाउद्दीन खिलजी ने आरंभ किया था, इसके अनुसार भूमि की नाप-जोख करने के पश्चात् उसके क्षेत्रफल के आधार पर लगान निर्धारित किया जाता था।
- मुक्ताई सल्तनत काल में लगान निर्धारित करने की एक मिश्रित प्रणाली थी।

99. Ans. 3

व्याख्या:-

- सल्तनत काल में गुप्तचर एवं डाक विभाग का अध्यक्ष बरीद-ए-मुमालिक कहलाता था।
- सल्तनतकाल में गुप्तचरों को मुनही/मुनहियान कहा जाता था।

100. Ans. 3

व्याख्या:-

- सल्तनत काल में मजमुआदार का कार्य आय व्यय को ठीक करना एवं ऋण का हिसाब रखना होता था।

101. Ans. 4

व्याख्या:-

- संपूर्ण मुगल साम्राज्य को सूबों में बाँटा गया था। प्रत्येक सूबे की अपनी पृथक राजधानी होती थी जहाँ सूबे के शासन का प्रधान सूबेदार रहता था। सूबेदार को नाजिम/सिपहसालार आदि के नाम से भी पुकारा जाता था।
- मुगलकाल में नगर के शासन का प्रधान कोतवाल कहलाता था। काजी एवं मीर-ए-अदल आदि नगर प्रशासन के प्रमुख अधिकारी होते थे।

102. Ans. 1

व्याख्या:-

- मुगल प्रशासन में सैन्य व असैन्य अधिकारियों के पदानुक्रम हेतु अकबर ने मनसब प्रणाली प्रारम्भ की थी।
- यह श्रेणी व्यवस्था थी जिसके द्वारा पद, वेतन तथा सैन्य उत्तरदायित्व निर्धारित किए जाते थे। पद तथा वेतन का निर्धारण जात की संख्या पर निर्भर था।
- **जात**- यह शाही पदानुक्रम में अधिकारी (मनसबदार) के पद व वेतन का सूचक था।
- **सवार**- किसी मनसबदार से कितने घुड़सवार अपेक्षित वह संख्या।
- मनसबदारी प्रणाली में प्रत्येक जागीरदार प्राथमिक रूप से मनसबदार होता था लेकिन प्रत्येक मनसबदार जागीरदार नहीं था क्योंकि कुछ मनसबदारों को जागीर ना देकर नगद अदायगी दी जाती थी।

103. Ans. 2

व्याख्या:-

मुगलकालीन प्रमुख अधिकारी और उनके कार्य-

- सावानिह निगार - समाचार भेजने वाला
- जामा-ए-कामिल - सामान्य दर पर लगान निर्धारण
- अहदी - बादशाह के व्यक्तिगत सैनिक
- अशरफ - कुलीन वंश का व्यक्ति

104. Ans. 3

व्याख्या:-

- मनसबदारी प्रणाली में जात और सवार के पद को आरंभ करने के साथ-साथ अकबर ने अपने 5000 और उससे कम संख्या के मनसबदारों की श्रेणियों में से प्रत्येक श्रेणी को तीन भागों में बांट दिया था।
- यदि एक मनसबदार को समान संख्या का सवार और जात का पद दिया जाता था तो वह अपनी श्रेणी के मनसबदारों में प्रथम श्रेणी का मनसबदार माना जाता था।
- यदि एक मनसबदार को सवार का पद अपने जात के पद से कम संख्या का परंतु आधे से कम नहीं, का प्राप्त होता था तो वह अपनी श्रेणी के मनसबदारों में द्वितीय श्रेणी का मनसबदार माना जाता था।
- यदि मनसबदार को सवार का पद अपने जात के पद की संख्या के आधे से कम का प्राप्त होता था तो वह अपनी श्रेणी के मनसबदारों में तृतीय श्रेणी का मनसबदार माना जाता था।

कलाम ACADEMY

105. Ans. 2

व्याख्या:-

- फरवरी 1527 ई. में सांगा रणथम्भौर से बयाना पहुँच गया। बयाना दुर्ग पर बाबर की तरफ से मेंहदी ख्वाजा दुर्ग के रक्षक के रूप में तैनात था। सांगा ने दुर्ग को घेरकर मुगल सेना को कमजोर कर दिया।
- बाबर ने बयाना की रक्षा के लिए मोहम्मद सुल्तान मिर्जा की अध्यक्षता (नेतृत्व) में सेना भेजी किन्तु राजपूतों ने इस सेना को परास्त कर खदेड़ दिया। अंततः 16 फरवरी, 1527 ई. को बयाना पर राजपूतों (सांगा) की विजय हुई।

106. Ans. 3

व्याख्या:-

- बाबर व राणा सांगा के मध्य संघर्ष का एक महत्त्वपूर्ण कारण सांगा द्वारा पानीपत के तृतीय युद्ध के समय सल्तनकालीन क्षेत्रों पर अधिकार कर लेना था।
- पानीपत के युद्ध से उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर सांगा ने खण्डार दुर्ग (रणथम्भौर के निकट) व उसके आस-पास के 200 गाँवों को अधिकृत कर लिया जिससे वहाँ के मुस्लिम परिवारों को पलायन करना पड़ा।

107. Ans. 1

व्याख्या:-

- मेवाड़ के संग्रामसिंह (सांगा) द्वारा विभिन्न शासकों को भेजे निमंत्रण (पाती परवण प्रथा) पर अफगान नेता हसनखाँ मेवाती तथा महमूद लोदी तथा राजपूताने के जिनमें से मारवाड़ के राव गांगा ने अपने पुत्र मालदेव को, आमेर का पृथ्वीराज, ईडर का राजा भारमल, मेड़ता के वीरमदेव मेड़तिया, वागड़ का रावल उदयसिंह, सलुम्बर का रावत रत्नसिंह, चंदेरी का मेदिनीराय, सादड़ी का झाला अज्जा, देवलिया का रावत बाघसिंह, जालौर के अखेराज सोनगरा, सिरोही का अजराज देवड़ा, ऊपरमाल का अशोक परमार, गोकुलदास परमार और बीकानेर के कुंवर कल्याणमल, सज्जा चुंडावत, रावत जग्गा, सारंगदेवोत, कर्मचंद आदि ससैन्य सांगा की सहायतार्थ पहुँच गए।

108. Ans. 4

व्याख्या:-

- **सांगा द्वारा लड़े गए युद्ध:-**

युद्ध	वर्ष	विवरण
खातौली (कोटा)	1517 ई.	• राणा सांगा ने दिल्ली के सुल्तान इब्राहम लोदी को पराजित किया।
बाड़ी (धौलपुर)	1518 ई.	• राणा सांगा ने इब्राहिम लोदी की सेना को पराजित किया।
गागरोन (झालावाड़)	1519 ई.	• राणा सांगा ने मालवा के महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित किया।
बयाना (भरतपुर)	16 फरवरी 1527 ई.	• राणा सांगा ने मुगल शासक बाबर की सेना को पराजित किया।
खानवा (भरतपुर)	17 मार्च 1527 ई.	• तोपखाने एवं तुलुगमा पद्धति के कारण बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।

109. Ans. 2

व्याख्या:-

- खानवा के युद्ध में सांगा के मूर्छित हो जाने पर आमेर के पृथ्वीराज, जोधपुर के मालदेव व सिरोही के अखैराज आदि उसे बसवा (दौसा) ले गए।
- युद्ध संचालन के लिए सरदारों ने सलूंबर के रावत रत्नसिंह चूण्डावत से सैन्य संचालन की प्रार्थना की।
- रत्नसिंह ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए कहा कि 'मेरे पूर्वज मेवाड़ का राज्य छोड़ चुके हैं इसलिए मैं एक क्षण के लिए भी राज्य चिह्न धारण नहीं कर सकता परन्तु जो कोई राज्यछत्र धारण करेगा उसकी पूर्ण रूप से सहायता करूंगा और प्राण रहने तक शत्रु से लड़ूंगा।'

110. Ans. 1

व्याख्या:-

राणा सांगा की बाबर के विरूद्ध पराजय के कारण-

- राणा के विभिन्न सरदार देश-प्रेम के भाव से युद्ध में सम्मिलित नहीं हुए थे अपितु सभी सरदारों के अलग-अलग स्वार्थ थे।
- कई राजपूत सरदारों के मध्य परस्पर शत्रुता थी जिससे सेना में समन्वय तथा तालमेल का अभाव था।
- संधि वार्ताओं ने इनके उत्साह को कमजोर कर दिया।

कलाम ACADEMY

- राजपूत सैनिकों का परंपरागत हथियार से लड़ना वहीं बाबर का तोपखाना व तुलुगमा पद्धति।
- सांगा स्वयं का हाथी पर बैठकर युद्ध में उतरना तथा युद्ध स्थल से बाहर जाने से सैनिकों का मनोबल कमजोर हुआ।
- राजपूतों में अलग-अलग सरदारों का नेतृत्व।
- राजपूतों की हस्ति सेना के मुकाबले बाबर की अश्व सेना की गतिशीलता अधिक होना।

111. Ans. 1

व्याख्या:-

- अकबर ने राणा उदयसिंह के विरूद्ध अक्टूबर 1567 ई. में चित्तौड़ पर आक्रमण किया, किन्तु जयमल, फत्ता व कल्ला के भीषण प्रतिरोध के कारण अकबर 25 फरवरी 1568 ई. में चित्तौड़ पर अधिकार कर पाया।
- इस युद्ध में जयमल, फत्ता व कल्ला लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। फत्ता की पत्नी फूल कंवर के नेतृत्व में महिलाओं ने 24 फरवरी 1568 ई. को जौहर किया जो **चित्तौड़ का तीसरा साका** कहलाता है।

112. Ans. 1

व्याख्या:-

हल्दीघाटी युद्ध के संबंध में प्रसिद्ध कथन :

1. खमनौर का युद्ध - अबुल-फजल
2. गोगुंदा का युद्ध - बदाँयूनी
3. मेवाड़ की थर्मोपल्ली व हल्दी घाटी का युद्ध - जेम्स टॉड
4. बादशाह बाग का युद्ध - आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव

113. Ans. 1

व्याख्या:-

- अकबर ने प्रताप को अधीन करने के लिए निम्न शिष्टमंडल भेजे-

शिष्टमंडल	प्रतिनिधि	तिथि
प्रथम	जलालखान कोरची	नवम्बर 1572
द्वितीय	कुंवर मानसिंह	6 जून 1573
तृतीय	राजा भगवन्तदास	9 अक्टूबर 1573
चतुर्थ	राजा टोडरमल	12 दिसम्बर 1573

114. Ans. 4

व्याख्या:-

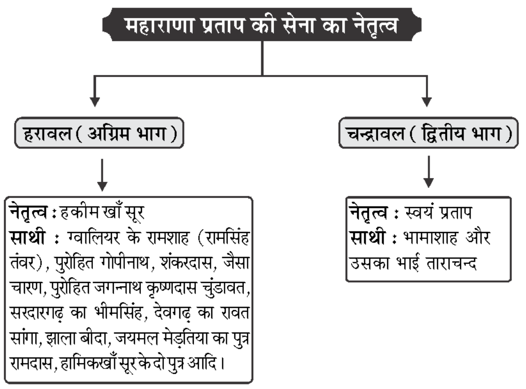

- महाराणा प्रताप की भील सेना का नेतृत्व राणा पूँजा भील ने किया था।

115. Ans. 2

व्याख्या:-

- हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी अकबर ने महाराणा प्रताप को झुकाने के लिए 1576 ई. से 1585 ई. तक अनेक सैनिक अभियान किये।
- 3 अप्रैल, 1578 ई. को शाहबाज खाँ ने कुंभलगढ़ पर अधिकार किया जिसे मुगलों द्वारा पहली बार कुंभलगढ़ को अधीन किया गया था।

116. Ans. 3

व्याख्या:-

- महाराणा प्रताप के पुत्र अमरसिंह ने 1580 में शेरपुर के मुगल शिविर पर आक्रमण कर अब्दुर्रहीम खानखाना के परिवार की महिलाओं को बंदी बना लिया परन्तु प्रताप के कहने पर ससम्मान लौटा दिया। यह प्रताप के शील-स्त्री सम्मान का द्योतक है।

117. Ans. 1

व्याख्या:-

- जुलाई, 1582 ई. में प्रताप ने अपने सैनिकों के साथ मुगलों के प्रमुख थाने 'दिवेर' (राजसमंद) को घेर लिया।
- महाराणा प्रताप के पुत्र अमर सिंह ने इस चौकी पर तैनात मुगल सुबेदार (अकबर के चाचा) सेरिमा सुल्तान खाँ (गौरी) को एक ही वार में मार डाला तथा मुगल सेना पर विजय प्राप्त की।
- कर्नल टॉड ने दिवेर के युद्ध को मेवाड़ का मैराथन कहा है।

कलाम ACADEMY

118. Ans. 1

व्याख्या:-

- अकबर ने 6 दिसम्बर 1584 ई. को आमेर के जगन्नाथ कछवाहा (भारमल का छोटा बेटा) को अजमेर का सूबेदार बनाकर मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिये भेजा। किन्तु उसे भी सफलता नहीं मिली।
- यह अकबर के द्वारा जगन्नाथ कछवाहा के नेतृत्व में भेजा गया अंतिम अभियान था। 1585 ई. के बाद अकबर ने प्रताप के विरूद्ध कोई सैन्य अभियान नहीं भेजा।

119. Ans. 3

व्याख्या:-

- राजसिंह ने अपने पिता जगतसिंह द्वारा आरम्भ किये गये चितौड़ दुर्ग की मरम्मत के कार्य को पूरा करने का निश्चय किया।
- चितौड़ दुर्ग के कार्य में आयी तीव्रता से चिन्तित मुगल सम्राट शाहजहाँ ने इसे 1615 ई. में हुई मुगल-मेवाड़ संधि की शर्तों के प्रतिकुल मानते हुए चितौड़ दुर्ग की दीवारों को ढ़हाने के लिए तीस हजार सैनिकों को **सादुल्ला खाँ** के नेतृत्व में भेजा।
- 1657-58 ई. में मुगल शाहजादों में उत्तराधिकार का संघर्ष छिड़ गया राजसिंह ने सक्रिय सहयोग किसी शहजादे का नहीं किया परंतु औरंगजेब से पत्र व्यवहार करता रहा।
- राजसिंह ने मुगल प्रशासन में उत्पन्न अव्यवस्था का फायदा उठाकर मेवाड़ का राज्यविस्तार करना प्रारंभ कर दिया।
- राजसिंह ने 'टीका दौड़' उत्सव का बहाना बनाकर 2 मई 1658 ई. में अपने राज्य के तथा बाहरी मुगल थानों पर हमले करना आरंभ दिया दरीबा पहली मुगल चौकी थी जिस पर हमला किया गया बाद में मांडल, बनेड़ा, शाहपुरा, खरवाड़, जहाजपुर, सावर और फूलिया पर अधिकार कर लिया।
- राजसिंह ने टोडा, मालपुरा, चाटसू, टोंक व लालसोट के मुगल थानों को लूटा।
- औरंगजेब ने राणा राजसिंह को **6000 जात एवं 6000 सवार का मनसब** प्रदान किया।
- 2 अप्रेल 1679 ई. में औरंगजेब ने हिन्दुओं पर पुन: जजिया कर लगाया।
- यह जजिया कर औरंगजेब तथा राजसिंह के मध्य उत्पन्न कटूता का एक प्रमुख कारण बनकर उभरा।
- राणा राजसिंह ने औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाने का पत्र लिखकर विरोध किया।

120. Ans. 1

व्याख्या:-

- महाराणा राजसिंह ने दुर्गादास राठौड़ के साथ मिलकर राठौड़-सिसोदिया गठबंधन बनाया।
- मेवाड़ महाराणा राजसिंह ने दुर्गादास राठौड़ को अजीतसिंह की परविश के लिए **केलवा** की जागीर दी तथा उनको सभी प्रकार से सहायता देने का वचन दिया।

121. Ans. 1

व्याख्या:-

- चन्द्रसेन को अधीन करने के लिए 1575 ई. में **जलाल खां** के नेतृत्व में सिवाना की तरफ अकबर ने बड़ी सेना फिर से भेजी जिसमें सैय्यद अहमद, सैय्यद हाशिम, शिमाल खां आदि शामिल थे। इस सेना पर चन्द्रसेन ने अवसर पा कर देवीदास के साथ मिलकर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में जलाल खां मारा गया।
- अकबर ने **शाहबाज खां** को भेजा। शाहबाज खां ने देवकोर और दुनाड़ा पर अधिकार कर सिवाना को घेर लिया।
- खाद्य सामग्री समाप्त होने पर सिवाना के दुर्ग रक्षक को किला छोड़ना पड़ा तथा **1575 ई. में सिवाना दुर्ग पर अकबर का अधिकार** हो गया।

122. Ans. 2

व्याख्या:-

- जब रायसिंह को औरंगजेब की शामूगढ़ की विजय की सूचना मिली तो इस सूचना पर वह अपनी राजधानी वापस लौटा तथा अपने पुत्र सौभाग्यसिंह (सुल्तानसिंह) तथा भाई अरिसिंह को विजयी सम्राट (औरंगजेब) को भेंट व बधाई देने भेजा।

123. Ans. 4

व्याख्या:-

- राव चन्द्रसेन अकबरकालीन राजस्थान का प्रथम स्वतंत्र प्रकृति का शासक था।
- चन्द्रसेन पहला राजपूत शासक था जिसने अपनी रणनीति में पहाड़ों व चंगलों को प्राथमिकता दी।
- दुर्गादास राठौड़ को राठौड़ों का यूलीसेस कहा जाता है।

कलाम ACADEMY

124. Ans. 3

व्याख्या:-

- मुगल दरबार में बीकानेर शासक रायसिंह को 5000 का मनसब प्रदान था।
- रायसिंह ने सिरोही के देवड़ा सुरताण तथा जालौर के ताज खाँ के विद्रोह का दमन किया।
- रायसिंह को दो बार जोधपुर का प्रशासक नियुक्त किया गया था।

125. Ans. 3

व्याख्या:-

- बीकानेर शासक रायसिंह को 1593 ई. में बुरहान-उल-मुल्क के विरूद्ध अभियान में दानियाल का सहयोग करने के लिए थट्टा भेजा था।

126. Ans. 2

व्याख्या:-

- 1570 ई. में अकबर की अजमेर यात्रा के दौरान लगाये गये नागौर दरबार में बीकानेर का शासक कल्याणमल भी अपने पुत्र कुंवर रायसिंह तथा पृथ्वीराज के साथ मुगल सेवा में उपस्थित हो गया।
- रायसिंह अकबर के पुत्र सलीम (जहांगीर) का विश्वास पात्र था जब अकबर मृत्यु शैय्या पर था तो सलीम (जहांगीर) ने रायसिंह को अपना पक्ष मजबूत करने के लिए शीघ्र आगरा बुलाया।
- रायसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह जहांगीर के साथ किया।
- जहांगीर ने अपने विजय जुलूस के उत्सव पर रायसिंह का मनसब पांच हजार जात/सवार कर दिया।

127. Ans. 2

व्याख्या:-

- रायसिंह की सेवाओं से प्रसन्न होकर अकबर ने उसे 1593 ई. में जूनागढ़ प्रदेश, काठियावाड़, नागौर 1600 ई. में तथा 1604 ई. में शमशाबाद व नूरपुर जागीर प्रदान कर **राय** की उपाधि दी।

128. Ans. 4

व्याख्या:-

- मुगलों द्वारा मानसिंह को काबुल, बंगाल व बिहार का सूबेदार का नियुक्त किया गया था।

129. Ans. 3

व्याख्या:-

- मानसिंह अकबर के नवरत्नों में से एक था। अकबर ने उसे **फर्जन्द (बेटा)** तथा मिर्जा राजा की उपाधि दी व अकबर ने ही 1605 ई. में मनसब बढ़ाकर 7000 जात व 6000 सवार कर दिया।
- 1569 ई. के रणथम्भौर आक्रमण के समय मानसिंह और उसका पिता भगवन्तदास अकबर के साथ थे। जो मुगल सेवा में मानसिंह का प्रथम अभियान था।
- मानसिंह ने 1590 से 1592 तक उड़ीसा के अफगान शासकों पर आक्रमण किया जिनमें जलेसर राज्य प्रमुख था अंत में अफगानों ने आत्म समर्पण कर दिया जिससे **मुगलों का उड़ीसा पर कब्जा** हो गया। उड़ीसा पहली बार मुगल साम्राज्य का हिस्सा बना।

130. Ans. 1

व्याख्या:-

- मानसिंह की सेवाओं से संतुष्ट होकर अकबर ने युसुफखाँ के स्थान पर 1580 ई. में मानसिंह को उत्तरी-पश्चिमी सीमान्त भागों तथा सिंध प्रदेश का स्वतंत्र अधिकारी नियुक्त किया।
- **हल्दीघाटी युद्ध** में मानसिंह के नेतृत्व में मुगल सेना ने महाराणा प्रताप से संघर्ष किया।
- मानसिंह की इस विफलता से नाराज अकबर ने मेवाड़ से मानसिंह तथा आसफखाँ को वापस बुला लिया।
- खींचीवाड़े के विद्रोह को दबाकर तथा मालवा में सुशासन व्यवस्था स्थापित कर मानसिंह ने पुनः अकबर का विश्वास जीत लिया।

कलाम ACADEMY

131. Ans. 1

व्याख्या:-

- मानसिंह ने मिर्जा हकीम (अफगान) के सेनापति शदमन (जिसने नीलम दुर्ग पर आक्रमण किया था) को पराजित किया। शदमन सूरजसिंह कछवाह द्वारा घायल हुआ जिसकी बाद में मृत्यु हो गई।

132. Ans. 2

व्याख्या:-

- मालदेव ने हुमायूँ के पास शेरशाह के विरूद्ध सहायता का प्रस्ताव भेजा लेकिन हुमायूँ लगभग 1 वर्ष के बाद मारवाड़ की ओर जाने का विचार किया। 7 मई, 1542 को हुमायूँ रोहरी से प्रस्थान कर अरू, देरावर, फलोदी, देईझर होते हुए अगस्त के प्रारम्भ के लगभग जोगीतीर्थ (कुल-ए-जोगी) पहुँचा।
- बादशाह के पुराने पुस्तकाध्यक्ष मुल्ला सुर्ख, जो मालदेव के पास आकर रह गया था ने सूचना भेजी की मालदेव के इरादे सही नहीं है अत: हुमायूँ को शीघ्रताशीघ्र मालदेव के राज्य से चले जाना चाहिए। इसके बाद हुमायूँ ने तुरंत अमरकोट की ओर प्रस्थान किया।

133. Ans. 2

व्याख्या:-

- निजामुद्दीन और अबुल फजल के अनुसार मालदेव का इरादा बदल चुका था और शेरशाह के द्वारा भेजे गए व्यक्ति से मंत्रणा कर बादशाह को गिरफ्तार कर शेरशाह के हवाले करना चाहता था।

134. Ans. 2

व्याख्या:-

- मालदेव अपने ज्येष्ठ पुत्र राम से नाराज था जबकि उससे छोटे पुत्र उदयसिंह को पटरानी स्वरूपदे (चंद्रसेन की माँ) ने राज्याधिकार से वंचित करवा दिया। इस कारण मालदेव की मृत्यु के बाद उसकी इच्छानुसार 31 दिसम्बर, 1562 ई. को चन्द्रसेन जोधपुर का शासक बना।
- चन्द्रसेन द्वारा चाकर की हत्या करने से नाराज सरदारों (जैतमाल, पृथवीराज प्रमुख) ने चन्द्रसेन से बदला लेने हेतु उसके भाई राम, उदयसिंह व रायमल के साथ गठबंधन किया। राम ने सोजत, रायमल ने दूनाड़ा व उदयसिंह ने गांगाणी व बावड़ी पर अधिकार कर लिया। उदयसिंह ने लोहावट के युद्ध में चन्द्रसेन से संघर्ष किया।

135. Ans. 3

व्याख्या:-

- राव चन्द्रसेन के नाराज भाइयों राम, उदयसिंह व रायमल के साथ आपसी कलह के कारण अकबर को हस्तक्षेप करने का मौका मिल गया।
- अकबर ने **हुसैनकुली खां** की अध्यक्षता में सेनी भेजी, जिसने **1564 ई.** को **जोधपुर पर अधिकार** कर लिया।

136. Ans. 1

व्याख्या:-

- चन्द्रसेन को आजीवन मुगलों से संघर्ष करना पड़ा जिसमें उसके सहयोगी रावल सुखराज, सूजा, सोजत का कल्ला, पत्ता राठौड़ (सिवाना) तथा देवीदास थे।

137. Ans. 2

व्याख्या:-

- **पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ** ने चन्द्रसेन की **तुलना महाराणा प्रताप** से की है।
- चंद्रसेन द्वारा की गई संघर्ष की शुरुआत को प्रताप ने जारी रखा इसी कारण चन्द्रसेन को **''प्रताप का अग्रगामी''** तथा **''मारवाड़ का प्रताप''** कहा जाता है।
- इतिहास में समुचित महत्व न मिलने के कारण चन्द्रसेन को **''मारवाड़ का भूला बिसरा नायक''** कहा जाता है।

138. Ans. 3

व्याख्या:-

- नागौर दरबार से लौट कर चन्द्रसेन ने मुगलों से संघर्ष के लिए भाद्राजूण में अपनी सेना को संगठित किया था।

139. Ans. 4

व्याख्या:-

- राणा सांगा के मूर्छित होने पर सरदारों ने सादड़ी के झाला अज्जा को हाथी पर बिठा कर युद्ध जारी रखा।

140. Ans. 2

व्याख्या:-

- मुगल शासक जहांगीर ने रायसिंह की नियुक्ति दक्षिण भारत में की थी जहां 22 जनवरी 1612 ई. में बुरहानपुर (मध्यप्रदेश) नामक स्थान पर उसकी मृत्यु हो गई।

कलाम ACADEMY

141. Ans. 3

व्याख्या:-

भूमध्य सागरीय कृषि

- यह कृषि 30° से 40° अक्षांशों के बीच महाद्वीपों के पश्चिमी भागों में भूमध्य सागरीय जलवायु वाले क्षेत्रों में की जाती है।
- इसका विस्तार भूमध्यसागर के समीपवर्ती क्षेत्र जो **दक्षिणी यूरोप से उत्तरी अफ्रीका में ट्यूनीशिया से एटलांटिक तट तक फैला है दक्षिणी कैलिफोर्निया (संता-आना नदी बेसिन), मध्यवर्ती चिली, दक्षिणी अफ्रीका का दक्षिणी पश्चिमी भाग एवं ऑस्ट्रेलिया के दक्षिण व दक्षिण पश्चिम भाग** में है।

142. Ans. 3

व्याख्या:-

- **बागाती/बागानी/रोपण कृषि**- यह एक फसली कृषि है जिसमें किसी एक फसल के उत्पादन पर ही सकेन्द्रण किया जाता है।
- इस कृषि की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें कृषि क्षेत्र का आकार बहुत विस्तृत होता है।
- इसमें अधिक पूँजी निवेश, उच्च प्रबंध एवं तकनीकी आधार एवं वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

143. Ans. 3

व्याख्या:-

सामूहिक कृषि (Collective Farming):-

- इस प्रकार की कृषि का आधारभूत सिद्धांत यह होता है कि इसमें उत्पादन के साधनों का स्वामित्व संपूर्ण समाज एवं सामूहिक श्रम पर आधारित होता है। कृषि का यह प्रकार पूर्व सोवियत संघ में प्रारंभ हुआ था।
- यह कृषि प्रणाली 1917 में रूस में हुई बोल्शेविक क्रान्ति के बाद अस्तित्व में आई।
- इजरायल में सामूहिक कृषि फार्मों को **किबुत्जिम** कहा जाता है।

सहकारी कृषि (Cooperative Farming):-

- सहकारी कृषि आंदोलन की शुरूआत पश्चिमी यूरोप से हुई थी तथा **डेनमार्क** इसका प्रणेता था।
- सोवियत संघ जहाँ इसे **कोलखहोज** का नाम दिया गया।

144. Ans. 3

व्याख्या:-

सम्बन्धित देश-स्थानान्तरी कृषि के नाम-

देश	कृषि का नाम
मलेशिया व इंडोनेशिया	लदांग/लादांग
म्यांमार	टाँग्या (तुंग्या)
श्रीलंका	चेन्ना
थाइलैण्ड	तामराई
जावा व इण्डोनेशिया	जुमा/हुमा/हुमाह
मेडागास्कर/ मालागासी	टावी/तावी
फिलीपीन्स	केंगिन
वियतनाम	रे
मेक्सिको/मध्य अमेरिका	मिल्पा/कोमिली/बरबेको
वेनेजुएला	कोनुको
ब्राजील	रोका
जायरे व मध्य अफ्रीका	मासोले (मसोल)/चिल्तेनेन
पश्चिमी अफ्रीका	लोगन
जाम्बिया	चितमीन
यूरोप	स्वीड्डेन
सूडान	न्गासू

145. Ans. 2

व्याख्या:-

प्रारम्भिक स्थाई कृषि

- स्थानान्तरित कृषि के क्षेत्र में ही खेतों को बदलने की बजाय एक ही स्थान पर स्थाई रूप से परम्परागत या आदिम तरीके से की जाने वाली निर्वाह प्रकार की कृषि को प्रारम्भिक स्थाई कृषि कहा गया है।
- इस कृषि को स्थानान्तरीत या चलवासी कृषि व्यवस्थाओं का विकसित रूप कहा जा सकता है।
- इसमें खेतों का आवर्तन नहीं होता है बल्कि फसलों का आवर्तन होता है।
- कृषि एक प्राथमिक क्रिया है। फसलों, फलों, सब्जियों, फूलों का उगाना और पशुधन पालन इसमें शामिल हैं। विश्व में पचास प्रतिशत लोग कृषि से संबंधित क्रियाओं में सलंग्न है। भारत की दो-तिहाई जनसंख्या अब तक कृषि पर निर्भर है।

कलाम ACADEMY

- प्राथमिक क्रियाओं में संलग्न श्रमिक **'लाल कॉलर श्रमिक'** कहलाते हैं।

चावल प्रधान निर्वाह कृषि

- इकाई भूमि पर आश्रित लोगों की संख्या अधिक होने के कारण यहाँ अधिकांश कृषि कार्यों में मानवीय श्रम की प्रधानता है एवं साथ में पशु शक्ति का प्रयोग किया जाता है। परन्तु मशीनों का प्रयोग नहीं किया जाता है। अत: इसे **खुरपी संस्कृति/कुदाल संस्कृति/हस्तश्रम संस्कृति (Hoe Culture)** भी कहा जाता है।

146. Ans. 1

व्याख्या:-

- **विश्व के विभिन्न भागों में चलवासी पशुचारण से जुड़ी मानव जातियाँ या मानव समूह:-**
- पश्चिमी अफ्रीका के सवाना मरूस्थल के **फुलानी**
- पूर्वी अफ्रीका (केन्या) के **मसाई** (गाय पालन)
- अरब मरूस्थल के **बद्दू** (ऊँट पालन)
- मध्य एशिया के **खिरगीज, कज्जाक व काल्मुक** (भेड़ व बकरी पालन)
- आर्कटिक तट के **याकूत, सेमोएड व कोरयाक** (रेंडियर पालन)
- भारत में जम्मू-कश्मीर के **गुज्जर, बकरवाल** (पशमीना बकरी पालन)
- हिमाचल प्रदेश के गद्दी व उत्तराखण्ड के **भूटिया** (भेड़ पालन)
- पश्चिमी राजस्थान के **राइका व रेबारी** (ऊँट पालन)
- नीलगिरी क्षेत्र के **टोडा** (भैंस पालक)

147. Ans. 2

व्याख्या:-

- वाणिज्यिक पशुपालन को रेन्चिंग भी कहा जाता है तथा इन पशु फार्मों को विभिन्न क्षेत्रों में निम्न नामों से जाना जाता है:-
- USA में **रेन्च**
- अर्जेन्टीना (पम्पास क्षेत्र में) **एस्टॉन्शिया**
- ऑस्ट्रेलिया में **स्टेशन**

148. Ans. 1

व्याख्या:-

- **चावल प्रधान निर्वाह कृषि**- जनसंख्या अधिक होने के कारण यहाँ भूमि जोत का आकार अत्यन्त छोटा है तथा भूमि का गहन उपयोग होता है जिससे यहाँ प्रति कृषक उत्पादन कम होता है तथा प्रति इकाई (हैक्टेयर) उत्पादन अधिक होता है।

149. Ans. 4

व्याख्या:-

बागवानी कृषि/उद्यानिकी

- यह कृषि प्रणाली सघन जनसंख्या वाले क्षेत्रों से संबंधित है।
- इसमें शीघ्र खराब होने वाली वस्तुओं जैसे:- सब्जी, फल-फूल आदि की कषि की जाती है।
- यह कृषि उत्तरी पश्चिमी यूरोप-ब्रिटेन, डेनमार्क, बेल्जियम, जर्मनी, नीदरलैण्ड तथा उत्तर-पूर्वी संयुक्त राज्य अमेरिका के सघन आबाद प्रदेशों तथा भूमध्यसागरीय प्रदेश में कृषि की जाती है।
- यह कृषि मुख्यत: उन क्षेत्रों में की जाती है जहाँ औद्योगिक क्षेत्र हों एवं जनसंख्या घनत्व अधिक हों।
- **संयुक्त राज्य अमेरिका** के दक्षिण-पूर्वी राज्य में इस प्रकार की कृषि को **'ट्रक फार्मिंग'** कहा जाता है जहाँ कृषक केवल सब्जियाँ पैदा करते हैं।
- इन उत्पादों (सब्जियों) को ट्रकों में भरकर फार्म एवं बाजार के मध्य की दूरी रातभर में तय कर सुबह तक बाजार में पहुँचाया जाता है इसलिए इसे **ट्रक कृषि** भी कहा जाता है।

कलाम ACADEMY

150. Ans. 2

व्याख्या:-

- यूरोप में स्थानान्तरणशील कृषि का नाम स्वीड्डेन कृषि है।
- प्रेयरी प्रदेश में बड़े पैमाने पर गेहूँ की कृषि। (प्रेयरी मैदान को **विश्व की रोटी की टोकरी/ ब्रैड बास्केट** कहा जाता है तथा प्रेयरी मैदान में कनाडा में स्थित **विनिपेग** विश्व की **सबसे बड़ी गेहूँ मंडी** के रूप में जाना जाता है।)
- भूमध्यसागरीय कृषि में निर्वाहक तथा वाणिज्यिक दोनों प्रकार की फसलों का उत्पादन है।
- खट्टे फलों के उत्पादन के कारण इस कृषि प्रदेश में शराब उद्योग का विकास हुआ है। (शराब उद्योग का हृदय)
- **चावल प्रधान निर्वाह कृषि**- यह कृषि दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया तथा पूर्वी एशिया के भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैण्ड, लाओस, मलेशिया, इण्डोनेशिया, वियतनाम, फिलीपीन्स, चीन व जापान आदि देशों में की जाती है।
- दक्षिणी पूर्वी एशिया को विश्व में **चावल की टोकरी** के नाम से जाना जाता है।

कलाम ACADEMY